पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

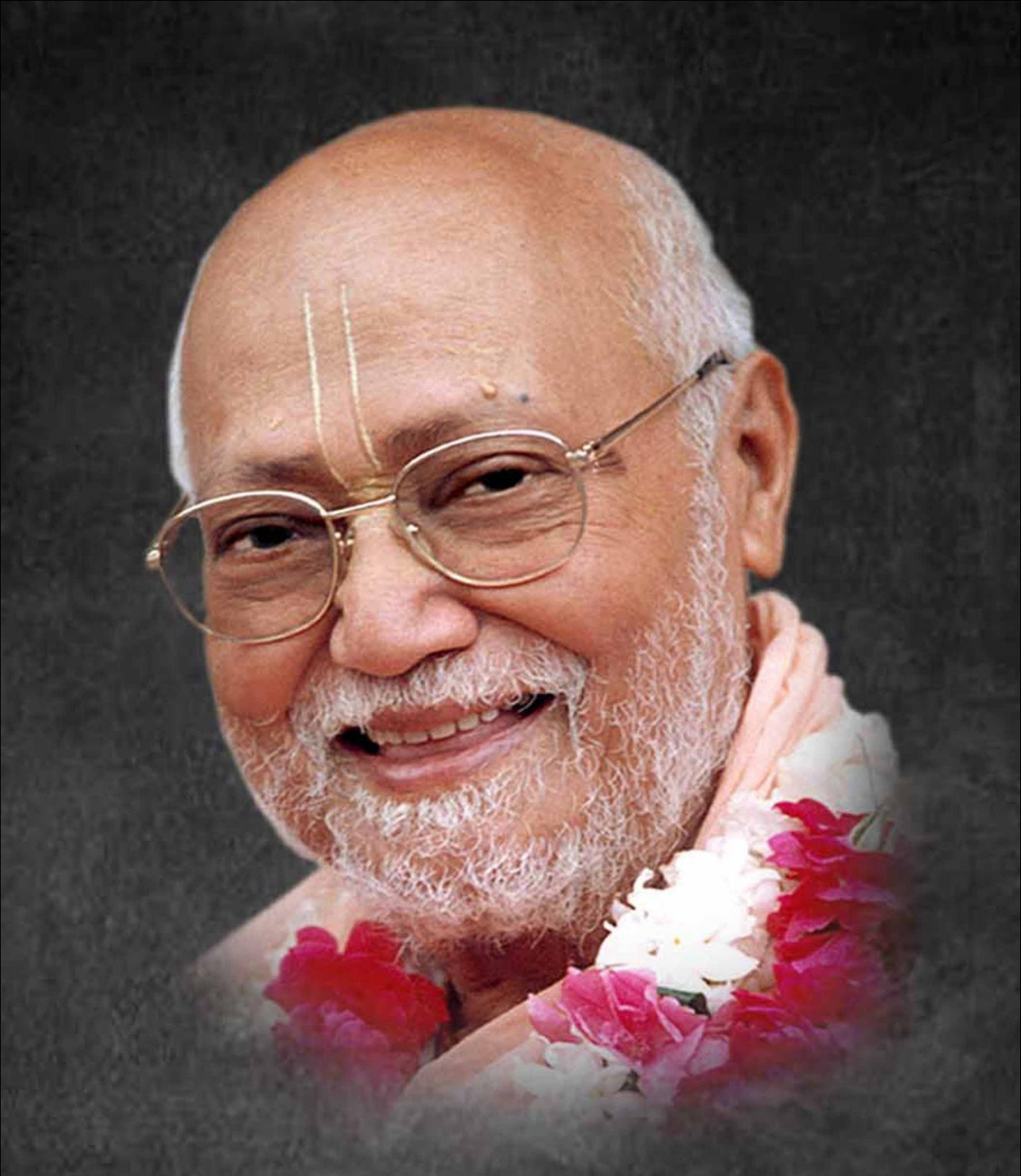

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 13

1977 में चण्डीगढ़ और जालन्धर में श्रील गुरुदेव

25 मार्च 1977 शुक्रवार से 29 मार्च मंगलवार तक चण्डीगढ़ मठ में एवं 7 अप्रैल वृहस्पतिवार से 10 अप्रैल रविवार तक श्रीकृष्णचैतन्य संकीर्त्तन सभा के उत्साह से जालन्धर शहर में चार दिन के वार्षिक धर्मसम्मेलन में श्रील गुरुदेव जी ने अपने पार्षदों सहित योगदान किया था। चण्डीगढ़ मठ के वार्षिक उत्सव में धर्म सम्मेलन में सभापति

और प्रधान अतिथिरूप से उपस्थित थे- चीफ कमिश्नर, श्री टी० एन० चतुर्वेदी, हरियाणा के राज्यपाल, श्री जय सुखलाल हाथी, रिटार्यड चीफ इन्जीनियर, पद्मभूषण, श्री पी० एल० वर्मा, एडवोकेट, श्री हीरालाल सिब्बल, पंजाब विश्वविद्यालय के उपाचार्य, डा० आर. सी. पाल, माननीय न्यायाधीश, श्री एम० आर० शर्मा, एस० एस० पी, चण्डीगढ़ पुलिस, श्रीगौतम कौल, न्यायाधीश, श्री एम० पी० गोयल और प्रोफेसर वी० सी० पाण्डे। श्रील गुरुदेव जी

ने जालव्धर संकीर्त्तनसम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा

'श्रीकृष्णचैतन्य देव की शिक्षा से परमार्थ जगत के सम्मान के आज एक नया स्थान ले लिया है। उनके द्वारा वितरित अमूल्य सम्पदा से धनी होकर आज जीवमात्र ही स्व-स्वरूप, परस्वरूप और विरोधी स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके स्व-स्वरूपानुवृत्ति से निश्चित मंगल की ओर अग्रसर हुआ है। इससे पहले कभी भी इतनी महान Spiritual game and Spiritual जीव को प्राप्त हो रही हो, देखी नहीं गयी।

श्रीकृष्णचैतव्य महाप्रभु जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलना ही हरेक व्यक्ति के लिए सामूहिक शान्ति का व विश्व शान्ति का एकमात्र पथ है। पंजाब के भूतपूर्व स्वास्थ्य और खाद्य मन्त्री, महन्त रामप्रकाश दास जी ने जालन्धर के नागरिकों की ओर से श्रील गुरुदेव जी को अशेष कृतज्ञता ज्ञापन करते हुये कहा कि श्रीकृष्णवैतव्य महाप्रभु जी की परम्परा में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के आचार्य, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति दयि माधव गोस्वामी महाराज जी प्रतिवर्ष जालन्धर में शुभागमन करके

हज़ारों-हज़ारों नर-नारियों को शुद्ध भक्ति-धर्म के अनुशीलन में प्रोत्साहित कर रहे हैं।

श्रीलगुरुदेव